

24 शैल संरचना → शैलों की कठोरता या कोमलता अपरदन को बहुत प्रभावित करती है।

34 ज्वारीय प्रभाव → ज्वारीय तरंगों अपरदन में सहायक होती हैं।

44 तराकूति → सुरक्षित पुलिन तथा खाड़ियाँ आदि की उपस्थिति अपरदन में बाधक होती हैं।

54 जलवायु वनस्पति सागर तल की स्थिरता - आर्द्र करक परोक्ष रूप से सागरीय अपरदन को प्रभावित करते हैं।

अपरदनात्मक स्थलाकृति

14 सागरीय भूगु → आग्नेय की अपेक्षा कोमल तलछटी तथा लम्बवत स्तरों वाली शैलों पर तटीय भागों में भूगु का निर्माण शीघ्रता से होता है। इससे एक खाँच या दाँता बन जाता है तथा सागर की ओर खड़े ताल वाली भूगु का निर्माण शीघ्रता से होता है।

24 खाड़ी तथा सागरीनमुख कागार क्रम → तटीय भाग में कोमल शैलों के शीघ्र अपरदन से कठोर शैल स्तर कागार के रूप में जीव रहते हैं।

34 लघु निवेशिका → तट के समान्तर क्रमशः कठोर व कोमल शैल परते विद्यी होने पर तरंगों का जब कठोर शैलों की सहायता प्रविष्ट होकर पीढ़ी की कोमल शैलों के अपरदन द्वारा खोखला कर देता है।

4- सागरीय कन्दरा एवं संबंधित आकार

तटीय शैलों में साधियों के विकसित होने पर वायु के थोड़ी के साथ सागरीय तरंग उनमें प्रवेश कर जाती हैं। इससे एक वात द्विज निर्मित होती है। धीरे धीरे अपरदन द्वारा इस द्विज का विकास तथा विस्तार होता है और एक कन्दरा बनाती है। तरंगों के जलीय दाब के कारण कन्दरा की छत का कुछ भाग टूट जाता है। तो संकरी व छोटी खाड़ी का निर्माण होता है। जिसे **जियो जियो कहते हैं।**

समुद्र के भीतर प्रविष्ट शैल के ऊपर पार द्विज बनने पर कालान्तर में एक विशाल द्वारा की समा होती है। जिसे **मेसाल कहते हैं।** इस में दराब की छत टूट जाने पर इसकी पिवार पर चिकी या स्तम्भ के रूप में रुकी रह जाती है। जिसे **स्ट्रोक या स्कीरी कहते हैं।**

निक्षेपात्मक स्थलाकृति

(1) **पुलिन** → सागर तट के सहारे प्राकार शैल या मलवे से निर्मित स्थल को पुलिन कहते हैं।

2- **कल्प पुलिन** → अधिकांश पुलिन के सागरवर्ती भाग में रेत गोबर वगैरह आदि के निक्षेप द्वारा पतले कठक बन जाते हैं। ये कठक सागर की ओर निकले रहते हैं। ऐसे पुलिन कवच पुलिन कहलाते हैं।

3- **शैथिक** → ये तरंग तथा धाराओं द्वारा निर्मित कठक या बाँध हैं। इसका निर्माण मुख्यतः तरंगों द्वारा निर्मित वेदिका पर तट के निकट या दूर तट के संलग्न रूप में होता है।